International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 4, May-June 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

1761 में पानीपत की तृतीय लड़ाई: इतिहास का एक मोड़ बिंदु

Ransingh Yadav

Assistant Professor, History, BSR Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan, India

ABSTRACT

जिस समय मराठे दक्षिण भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहे थे, उस समय भारत की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई थी। अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण करने शुरू कर दिए थे। इधर मराठे भी चम्बल नदी तक धावा बोल रहे थे। 1752 ई. में मुगलों तथा मराठों के मध्य एक सन्धि हुई। इस सन्धि के अनुसार मुगलों ने मराठों को₹ 50 लाख देने का वायदा किया था। इसके बदले में मराठों ने उनकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया था। किन्तु मुगलों ने इस सन्धि का पालन नहीं किया। इस पर रघुनाथराव ने 1754-56 ई. में उत्तरी भारत पर आक्रमण किया और नजीबुद्दौला को परास्त कर सन्धि के लिए विवश किया।रघुनाथ राव उसके पुत्र इमाद-उल-मुल्क को दिल्ली का वजीर बनाकर वापस लौट गया। इसके पश्चात् उसने मल्हारराव होल्कर के साथ पंजाब पर आक्रमण कर दिया। अहमदशाह अब्दाली पंजाब को अपना सूबा समझता था, जहाँ उसका पुत्र तैमूरशाह शासन करता था। मार्च, 1758 में मराठों ने सरहिन्द पर और अप्रैल, 1758 में लाहौर पर अपना अधिकार जमा लिया। उन्होंने तैमूरशाह को पंजाब से मार भगाया और उसकी जगह अपने मित्र अदीनाबेग को पंजाब का गवर्नर बना दिया। बदले में अदीनाबेग ने मराठों को ₹75 लाख वार्षिक कर देना मंजूर किया।1759 ई. में अदीनाबेग की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के उपरान्त पेशवा ने दत्ताजी सिन्धिया को पंजाब भेजा। इधर अहमदशाह अब्दाली भी चुप बैठने वाला नहीं था। उसने नवम्बर, 1759 में पंजाब पर चढ़ाई कर दी और पंजाब को फिर जीत लिया और दिल्ली के समीप बरारीघाट में दत्ताजी सिन्धिया को पराजित कर मार डाला। 1760 ई. में उसने दिल्ली में प्रवेश किया और मल्हारराव होल्कर को पराजित किया। अब वह मराठों से अन्तिम निर्णय करने के लिए अलीगढ़ में डेरा डालकर बैठ गया। जब मराठों के पीछे हटने का समाचार पेशवा के पास पहुंचा, तो उसने शीघ्र ही अपने चचेरे भाई सदाशिवराव भाऊ की अध्यक्षता में एक बड़ी सेना, जिसमें लगभग दो लाख सैनिक थे, अब्दाली को दिल्ली से खदेड़ देने के लिए भेजी। उसकी सहायता के लिए. इब्राहीमगार्दी खाँ को भी तोपखाना देकर भेजा गया। इस सेना में आगरा के पास मल्हारराव होल्कर और जनाकोजी भाऊ भी सम्मिलित हुए। भरतपुर के जाट सूरजमल की फौजें भी इस आश्वासन के पश्चात् कि उससे चौथ नहीं माँगी जाएगी, इनके साथ हो गईं। परन्तु भाऊ अन्य राजपूत राजाओं को मिलाने में असफल रहा। इधर भाऊ से मतभेद होने से सूरजमल अपनी सेना के साथ भरतपुर वापस लौट गया। इससे मराठों की शक्ति को गहरा आघात पहुँचा।सदाशिवराव भाऊ ने 1760 ई. में दिल्ली को अफगानों से छीन लिया। इसके पश्चात् वे पानीपत पहुँचे। तब तक अब्दाली ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला को अपनी ओर मिला लिया और इस प्रकार अपनी शक्ति में वृद्धि करके वह भी पानीपत के मैदान में जा डटा। बीच-बीच में एकाध मुठभेड़ हुईं, किन्तु कोई महत्त्वपूर्ण परिणाम नहीं निकला।

How to cite this paper: Ransingh Yadav "Third Battle of Panipat in 1761: A Turning Point in History" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-4, June 2022, pp.968-977, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50238.pdf

IJTSRD50238

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

दिसम्बर तक दोनों सेनाएँ अवसर की प्रतीक्षा में लगी रहीं। इस बीच मराठों की रसद समाप्त हो गई। इस समय मराठों ने लड़ने का ही निश्चय कर लिया। 14 जनवरी, 1761 को मराठों ने अफगान सेना पर आक्रमण कर दिया। अब्दाली की सेना और मराठों की सेना में भयंकर युद्ध हुआ। इब्राहीमगार्दी खाँ ने अपने तोपखाने के साथ रुहेलों की सेना पर आक्रमण किया और सदाशिवराव भाऊ अपने चुने हुए अश्वारोहियों के साथ शत्रु सेना के मध्य भाग पर टूट पड़ा और उसे छिन्न-भिन्न कर दिया। दोपहर के बाद घमासान युद्ध हुआ।

मराठे बिना दाना-पानी के एकदम थक गए थे, परन्तु फिर भी बड़े धैर्य और साहस के साथ -शत्रु का सामना कर रहे थे। दुर्भाग्यवश पेशवा का ज्येष्ठ पुत्र विश्वासराव लड़ता हुआ मारा गया। उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर भाऊ असावधान होकर शत्रु की सेना में घुसकर युद्ध करने लगा, किन्तु वह भी लड़ता

हुआ मारा गया। दोनों सेनापतियों की मृत्यु का समाचार पाकर मराठा सेना में भगदड़ मच गई और उचित नेतृत्व के अभाव में मराठा सैनिक युद्धभूमि से भागने लगे। अब्दाली की सेना ने भागती हुई मराठा सेना का पीछा किया और उनके शिविर को लूट लिया। इस प्रकार पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठों की भीषण पराजय हुई और अब्दाली को विजय प्राप्त हुई। मराठा सेना के विनाश के सम्बन्ध में एक इतिहासकार ने लिखा है कि:-

"पानीपत के युद्ध ने मराठों की रीढ़ तोड़ दी। महाराष्ट्र में ऐसा घर शेष नहीं रहा था जिसका कोई सदस्य इस युद्ध में काम न आया हो।" वास्तव में इस युद्ध में मराठों की एक पीढ़ी का अन्त हो गया।

पानीपत का तीसरा युद्ध भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस युद्ध के परिणाम के विषय में इतिहासकारों में पर्याप्त मतभेद है। सभी मराठा इतिहासकार इस बात को स्वीकार करते हैं कि इस युद्ध में 45 हजार मराठा सैनिक मारे गए, किन्तु उनके लक्ष्य को कोई विशेष हानि नहीं पहुँची। मराठा इतिहास के विशेषज्ञ सरदेसाई ने लिखा है, "इस युद्ध में मराठा जनशक्ति का विनाश अवश्य हुआ, किन्तु यह विनाश उनकी शक्ति का अन्तिम निर्णायक नहीं था। वास्तव में इस युद्ध ने लम्बे समय बाद महान् जाति के प्रसिद्ध पुरुष नाना फड़नवीस और महादजी को चमका दिया, जो कि प्रलयंकारी दिन बड़ी आश्चर्यजनक रीति से मृत्यु से बचकर निकल गए थे और उन्होंने मराठों के पूर्व गौरव को पुनर्जीवित किया था। पानीपत के इस युद्ध में हुआ विनाश दैवीय प्रकोप के समान था। इसने मराठों की जीवन शक्ति को नष्ट कर दिया, [1,2]

किन्तु इससे उनके राजनीतिक जीवन का अन्त नहीं हो पाया। यह मान लेना कि पानीपत के विनाश ने मराठों के सार्वभौमिकता के स्वप्न को सदा के लिए नष्ट कर दिया था, परिस्थिति को ठीकठीक न समझना है, जैसा कि तत्कालीन लेखों से ज्ञात होता है।" उक्त मत के विरोध में अपना मत प्रस्तुत करते हुए यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि "इतिहास के पक्षपात रहित अध्ययन से ज्ञात होता है कि मराठों का यह जोरदार दावा निर्मूल है। इसमें सन्देह नहीं कि मराठा सेना ने निर्वासित मुगल सम्राट को 1772 ई. में अपने पूर्वजों के सिंहासन पर फिर से आसीन किया था, किन्तु वे उस समय न तो राज्य निर्माता हुए और न मुगल साम्राज्य के वास्तविक शासक, वरन् उनकी स्थिति तो नाममात्र के मन्त्रियों तथा सेनापतियों जैसी थी। इस प्रकार का गौरवपूर्ण पद तो केवल 1780 ई. में महादजी सिन्धिया और 1803 ई. में अंग्रेज ही प्राप्त कर पाए थे।"

उपर्युक्त दोनों मतों के अध्ययन से पता चलता है कि यदुनाथ सरकार का मत अधिक उपयुक्त एवं सत्य है। फिर भी पानीपत के तीसरे युद्ध में पराजय से मराठों को भीषण हानि हुई। संक्षेप में, इस युद्ध के निम्नलिखित परिणाम हुए

1. अपार जनशक्ति का विनाश -

इस युद्ध में **मराठों** की अपार जनशक्ति नष्ट हो गई। लगभग 45 हजार सैनिक इस फुद्ध में काम आए। एक लाख व्यक्तियों में से केवल कुछ हजार व्यक्ति ही अपनी जान बचाकर महाराष्ट्र पहुँच, होता था, जिसका काम लगान वसूल करना था। प्रमुख नगरों में एक कोतवाल भी होता था, जिसका काम नगर में शान्ति तथा व्यवस्था बनाए रखना था।

2. पेशवा के प्रभाव का अन्त-

इस युद्ध में **मराठों** की पराजय ने पेशवा के प्रभाव का अन्त कर दिया और मराठा संघ की एकता नष्ट होने लगी। मराठों में, पारस्परिक संघर्ष एवं कलह होने के कारण उनकी शक्ति को गहरा आघात पहुँचा। पेशवा इन मराठों को अपने नियन्त्रण में न कर सका और धीरे-धीरे उसकी शक्ति कम होती गई।

3. उत्तरी भारत में मराठों का प्रभाव समाप्त होना -

पानीपत की पराजय से उत्तरी भारत में मराठों का प्रभाव पूर्णतया समाप्त हो गया। दोआब तथा पंजाब. प्रदेश उनके हाथ से निकल गए। --

4. अंग्रेजों का उत्थान -

मराठों की पराजय ने अंग्रेजों के उत्थान में विशेष योगदान दिया, क्योंकि अब भारत में कोई शक्तिशाली जाति न रही, जो अंग्रेजों का मुकाबला कर सकती। अतएव अंग्रेजी शक्ति का बड़ी तेजी से उत्थान आरम्भ "हो गया।

5. मुगलों का पतन-

पानीपत के युद्ध ने मुगलों को भी पतन के गर्त में धंकेल दिया। उनमें अब इतनी शक्ति नहीं रह गई थी कि वे अंग्रेजों का सामना करने में सफल हो सकते।[3,4]

6. नैतिक प्रभाव -

पानीपत की पराजय ने मराठों की मान और प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया। उनकी अजेय शक्ति का कोई मूल्य नहीं रह गया और दूसरे राज्य उनकी मित्रता को प्राप्त करने में संकोच करने लगे।

पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की पराजय के कारण

पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की पराजय के निम्नलिखित कारण थे

1. **मराठा सेनापति सदाशिवराव** के व्यवहार से कई बड़े मराठा सेनापति असन्तुष्ट थे। वह प्रत्येक कार्य में अपनी मनमानी करता था और किसी से सलाह लेना आवश्यक नहीं समझता था।
2. मराठा सेनापति सदाशिवराव के पास प्रारम्भ से ही धन का अभाव था। उसके पास एक विशाल सेना के लिए पर्याप्त भोजन सामग्री नहीं थी।
3. मराठों की अपेक्षा **अहमदशाह अब्दाली** की सेना की संख्या अधिक थी और उसका नेतृत्व **अहमदशाह अब्दाली** स्वयं कर रहा था, जो अत्यन्त वीर और साहसी योद्धा था।
4. **अब्दाली** ने रोहिलखण्ड के नवाब और अवध के नवाब शुजाउद्दौला को अपने साथ मिला लिया था। इससे उसको सब प्रकार की आर्थिक और सैनिक सहायता मिल गई। उसे भोजन सामग्री की इतनी कठिनाई नहीं उठानी पड़ी जितनी मराठों को। उसने अपनी सेना की सहायता से मराठों की भोजन सामग्री आने के सभी मार्ग बन्द कर दिए।
5. मराठों की सेना में अनुशासन की कमी थी। इन्दौर के महाराज **मल्हारराव होल्कर** व ग्वालियर के महाराज सिन्धिया के भाऊ साहिब से अच्छे सम्बन्ध नहीं थे। मल्हारराव होल्कर ने पानीपत के मैदान में सुस्ती दिखाई

और जब मराठों की हार हुई, तो अपनी सेना सहित भाग गया। इसके विपरीत अहमदशाह अब्दाली की सेना में कड़ा अनुशासन था।

6. अफगानों का तोपखाना मराठों से श्रेष्ठ था। अफगानों की रण पद्धति भी मराठों से बहुत अच्छी थी।[5,6]

विचार-विमर्श

पानीपत का तीसरा युद्ध अहमद शाह अब्दाली और मराठा सेनापति सदाशिव राव भाऊ के बीच 14 जनवरी 1761 को वर्तमान पानीपत के मैदान मे हुआ जो वर्तमान समय में हरियाणा में है। इस युद्ध में गार्दी सेना प्रमुख इब्राहीम ख़ाँ गार्दी ने मराठों का साथ दिया तथा दोआब के अफगान रोहिला और अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने अहमद शाह अब्दाली का साथ दिया।मुग़ल साम्राज्य का अंत (1737 - 1857) में शुरु हो गया था, जब मुगलों के ज्यादातर भू भागों पर मराठों का आधिपत्य हो गया था। 1739 में नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया। 1757 ईस्वी में रघुनाथ राव ने दिल्ली पर आक्रमण कर दुर्रानी को वापस अफ़गानिस्तान लौटने के लिए विवश कर दिया तत्पश्चात उन्होंने अटक और पेशावर पर भी अपने थाने लगा दिए। अहमद शाह दुर्रानी को ही नहीं अपितु संपूर्ण उत्तर भारत की शक्तियों को मराठों से संकट पैदा हो गया जिसमें अवध के नवाब सुजाउद्दौला और रोहिल्ला सरदार नजीबउद्दोला भी सम्मिलित थे।

अहमद शाह दुर्रानी जो कि दुर्रानी साम्राज्य का संस्थापक था और 1747 में राज्य का सुल्तान बना था । सभी ने अहमदशाह को भारत में आने का न्योता दिया । जब यह समाचार मराठों के पास पहुंचा तो 1757 को पेशावर में दत्ताजी सिंधिया, जिन्हें पेशवा बालाजी बाजीराव ने वहाँ पर नियुक्त किया था उन्होंने कार्रवाई की परंतु अफगान सेना और शूजाउद्दौला आदि ने यह धोखे से मार दिया ।[7,8]

उस वक्त सदाशिव राव भाऊ जो की पानीपत के युद्ध के नायक थे, उदगीर में थे जहाँ पर उन्होंने 1759 में निजाम की सेनाओं को हराया था जिसके बाद उनके ऐश्वर्य में काफी वृद्धि हुई और वह मराठा साम्राज्य की सबसे ताकतवर सेनापति में गिने जाने लगे । इसलिए बालाजी बाजी राव ने अहमदशाह से लड़ने के लिए भी उन्हें ही चुना ।

सदाशिवराव भाऊ अपनी समस्त सेना को उदगीर से लेकर सीधे दिल्ली की ओर रवाना हो गए जहाँ वे लोग 1760 ईस्वी में दिल्ली पहुंचे। उस वक्त अहमद शाह अब्दाली दिल्ली पार करके अनूप शहर यानी दोआब में पहुँच चुका था और वहाँ पर उसने अवध के नवाब सुजाउदौला और रोहिल्ला सरदार नजीबउद्दौला ने उसको रसद पहुंचाने का काम किया।

इधर जब मराठे दिल्ली में पहुंचे तो उन्होंने लाल किला जीत लिया जिसके बाद उन्होंने कुंजपुरा के किले पर हमला कर दिया । कुंजपुरा में अफगान को पूरी तरह तबाह करके उनसे सभी सामान और खाने-पीने की आपूर्ति मराठों को हो गई । मराठों ने लाल किले की चांदी की चादर को भी पिघला कर उससे भी धन अर्जित कर लिया ।

उस वक्त मराठों के पास उत्तर भारत में दिल्ली ही धनापूर्ति का एकमात्र साधन थी परंतु बाद में अब्दाली को रोकने के लिए यमुना नदी के पहले उन्होंने एक सेना तैयार की थी,परंतु अहमदशाह ने नदी पार कर ली । अक्टूबर के महीने में और किसी गद्दार की गद्दारी की वजह से मराठों कि वास्तविक जगह और स्तिथी का पता लगाने में सफल रहा ।

जब मराठों कि सेना वापिस मराठवाड़ा जा रही थी तो उन्हें पता चला कि अब्दाली उनका पीछा कर रहा है, तब उन्होंने युद्ध करने का निश्चय किया। अब्दाली ने दिल्ली और पुणे के बीच मराठों का संपर्क काट दिया । मराठों ने भी अब्दाली का संपर्क काबुल से काट दिया। इस तरह तय हो गया था कि जिस भी सेना को पूर्ण रूप से अन्न जल की आपूर्ति होती रहेगी वह युद्ध जीत जाएगी ।

करीब डेढ़ महीने की मोर्चा बंदी के बाद 14 जनवरी सन् 1761 को बुधवार के दिन सुबह 8:00 बजे यह दोनों सेनाएं आमने-सामने युद्ध के लिए आ गई ।[9,10]

मराठों को रसद की आमद हो नहीं रही थी और उनकी सेना में भुखमरी फैलती जा रही थी, परंतु अहमदशाह को अवध और रूहेलखंड से रसद की आपूर्ति हो रही थी ।

विश्वासराव को करीब 1:00 से 2:30 के बीच एक गोली शरीर पर लगी और वह गोली इतिहास को परिवर्तित करने वाली साबित हुई । जब सदाशिवराव भाऊ अपने हाथी से उतर कर विश्वासराव को देखने के लिए मैदान में पहुंचे तो उन्होंने विश्वासराव को मृत पाया ।

इधर जब बाकी मराठा सरदारों ने देखा कि सदाशिवराव भाऊ अपने हाथी पर नहीं है तो पूरी सेना में हड़कंप मच गया, जिससे सेना का कमान ना होने के कारण पूरी सेना में अफरा तफरी मच गई और सारे सैनिक भागने लगे । इसी भगदड़ में कई सैनिक वीरगति को प्राप्त हो गए परंतु भाऊ सदाशिवराव अपनी अंतिम श्वास तक लड़ते रहे ।

इस युद्ध में शाम तक आते-आते पूरी मराठा सेना खत्म हो गई । अब्दाली ने इस मौके को एक सबसे अच्छा मौका समझा और 15000 सैनिक जो कि आरक्षित थे उनको युद्ध के लिए भेज दिया और उन 15000 सैनिकों ने बचे-खुचे मराठा सैनिक जो सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व में थे उनको खत्म कर दिया ।

मल्हारराव होळकर वहाँ से पेशवा के वचन के कारण साथ गई 20 मराठा स्त्रियों को युद्ध से सुरक्षित बडी ही कूटनीति से निकालकर लाए । सिंधिया और नाना फडणवीस भी यहाँ से भाग निकले । उनके अलावा और कई महान सरदार जैसे विश्वासराव पेशवा, सदाशिवराव भाऊ तथा जानकोजी सिंधिया भी इस युद्ध में मारे गए । इब्राहिम खान गार्दी जो कि मराठा तोपखाने की कमान संभाले हुए थे उनकी भी इस युद्ध में बहुत बुरी तरीके से मौत हो गई और कई दिनों बाद सदाशिवराव भाऊ और विश्वासराव का शरीर मिला ।

इसके साथ 40000 तीर्थयात्रियों जो मराठा सेना के साथ उत्तर भारत यात्रा करने के लिए गये थे उनको पकड़ कर उनका कत्लेआम करवा दिया। पानी पिला पिला कर उनका वध कर दिया गया। एक लाख से ज्यादा लोग युद्ध में मारे गए ।

यह बात जब पुणे पहुंची तब बालाजी बाजीराव को गुस्से का ठिकाना नहीं रहा और वह बहुत बड़ी सेना लेकर पानीपत की

ओर चल पड़े । जब अहमद शाह दुर्रानी को यह खबर लगी तो उसने खुद को रोक लेना ही सही समझा क्योंकि उसकी सेना में भी हजारों का नुकसान हो चुका था, और वह सेना वापस अभी जो भी नहीं लड सकती थी । इसलिए उसने 10 फरवरी,1761 को पेशवा को पत्र लिखा कि "मैं जीत गया हूँ लेकिन दिल्ली की गद्दी नहीं लूगा, आप ही दिल्ली पर राज करें मैं वापस जा रहा हूँ।"[11,12]

अब्दाली का भेजा पत्र बालाजी बाजीराव ने पत्र पढ़ा और वापस पुणे लौट गए । परंतु थोड़े में ही 23 जून 1761 को मानसिक अवसाद के कारण उनकी मृत्यु हो गई, क्योंकि इस युद्ध में उन्होंने अपना पुत्र और अपने कई मराठा सरदारों को खो दिया था ।

1761 में माधवराव द्वितीय पेशवा बने और उन्होंने महादाजी सिंधिया और नाना फडणवीस की सहायता से उत्तर भारत में अपना प्रभाव फिर से जमा लिया । 1761 से 1772 तक उन्होंने वापस रोहिलखंड पर आक्रमण किया और नजीबउद्दौला के पुत्र को भयानक रूप से पराजित किया ।

इस युद्ध में मराठी ने पूरे रोहिल्लखंड को ध्वस्त कर दिया तथा नजीबउद्दौला कब्र को भी तोड़ दिया । संपूर्ण भारत पर एक बार फिर मराठा परचम फैल गया और उन्होंने दिल्ली में फिर से मुगल सम्राट शाह आलम को राजगद्दी पर बैठाया और पूरे भारत पर शासन करना फिर से प्रारंभ कर दिया ।

महादाजी सिंधिया और नाना फडणवीस का मराठा पुनरुत्थान में बहुत बड़ा योगदान है और माधवराव पेशवा की वजह से ही यह सब हो सका । इस प्रकार मराठा साम्राज्य का पुनरुत्थान हुआ और कालांतर में मराठों ने ब्रिटिश को भी पराजित किया और सालाबाई की संधि की ।

पानीपत का युद्ध भारत के इतिहास का सबसे काला दिन रहा। और इसमें कई सारे महान सरदार मारे गए जिस देश के लिए लड़ रहे थे और अपने देश के लिए लड़ते हुए सभी श्रद्धालुओं की मौत हो गई इसमें सदाशिवराव भाऊ, शमशेर बहादुर, इब्राहिम खान गार्दी, विश्वासराव, जानकोजी सिंधिया की भी मृत्यु हो गई।इस युद्ध के बाद खुद अहमद शाह दुर्रानी ने मराठों की वीरता को लेकर उनकी काफी तारीफ की और मराठों को सच्चा देशभक्त भी बताया।

इस युद्ध में मराठा के लगभग सभी छोटे-बड़े सरदार मारे गए इस संग्राम पर टिप्पणी करते हुए जे.एन.सरकार जादुनाथ सरकारने लिखा है इस देशव्यापी विपत्ति में संम्भवत महाराष्ट्र का कोई ऐसा परिवार ने होगा जिसका कोई न कोई सदस्य इस युद्ध में मारा न गया हो ।[13,14]

मराठों की पराजय का एक कारण तो यही माना जाता है कि पेशवा बालाजी बाजीराव ने रघुनाथ राव, महादजी सिंधिया अथवा मल्हार राव होलकर के बदले भाऊ सदाशिवराव को सेनापति बना कर भेजा । जबकि उपरोक्त तीनों ही उस समय उत्तर भारत में मराठा सेना का नेतृत्व करने में सक्षम थे. पानीपत का तीसरा युद्ध अहमद शाह अब्दाली व मराठों के बीच 14जनवरी1761को सुबह 8:00बजे लङा गया जिसमे अहमद शाह अब्दाली की जीत हुई।

परिणाम

सदाशिवराव भाऊ की कमान में मराठों ने ४५,०००-६०,००० के बीच की एक सेना को इकट्ठा करके जवाब दिया, जिसमें लगभग २००,००० गैर-लड़ाके थे, जिनमें से कई तीर्थयात्री थे जो उत्तर भारत में हिंदू पवित्र स्थलों की तीर्थयात्रा करने के इच्छुक थे। मराठों 14 मार्च 1760 दोनों पक्षों पाने की कोशिश की पर Patdur से उनके उत्तर की ओर यात्रा शुरू की अवध के नवाब, शुजा-उद-दौला उनके शिविर में,। जुलाई के अंत तक शुजा-उद-दौला ने अफगान-रोहिल्ला गठबंधन में शामिल होने का फैसला किया, जो " इस्लाम की सेना" के रूप में माना जाने वाला शामिल होना पसंद करते थे । यह मराठों के लिए रणनीतिक रूप से एक बड़ा नुकसान था, क्योंकि शुजा ने उत्तर भारत में लंबे समय तक अफगान प्रवास के लिए बहुत आवश्यक वित्त प्रदान किया था । यह संदिग्ध है कि क्या अफगान-रोहिल्ला गठबंधन के पास शुजा के समर्थन के बिना मराठों के साथ अपना संघर्ष जारी रखने का साधन होगा।ऊँचे और विशाल तंबू, रेशम और चौड़े कपड़े से लदे, बड़े सोने के आभूषणों से घिरे थे, जो कुछ ही दूरी पर सुस्पष्ट थे... बड़ी संख्या में हाथियों, सभी विवरणों के झंडे, बेहतरीन घोड़े, भव्य रूप से लथपथ ... हर तिमाही ... यह मुगलों की उनकी महिमा के चरम पर अधिक बनने और स्वादिष्ट सरणी की नकल थी।[15,16]

मध्यकाल (1712-1757) में मराठों ने भारत के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण हासिल कर लिया था । १७५८ में उन्होंने नाममात्र रूप से दिल्ली पर कब्जा कर लिया, लाहौर पर कब्जा कर लिया और तैमूर शाह दुर्रानी को बाहर कर दिया, अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली के बेटे और वाइसराय । यह मराठा विस्तार का उच्च-जल चिह्न था, जहां उनके साम्राज्य की सीमाएं सिंधु नदी के उत्तर में दक्षिण से लेकर उत्तरी केरल तक फैली हुई थीं । इस क्षेत्र पर पेशवा का शासन था, जिन्होंने अपने पुत्र विश्वासराव को मुगल सिंहासन पर बिठाने की बात कही थी । हालाँकि, दिल्ली अभी भी मुगलों के नियंत्रण में थी, शाह वलीउल्लाह सहित प्रमुख मुस्लिम बुद्धिजीवी और भारत के अन्य मुस्लिम पादरी इन घटनाओं से भयभीत थे। हताशा में उन्होंने अफगानिस्तान के शासक अहमद शाह अब्दाली से खतरे को रोकने की अपील की ।अहमद शाह दुर्रानी (अहमद शाह अब्दाली), अपने बेटे और उसके सहयोगियों की खबर से नाराज़, मराठों के प्रसार को अनियंत्रित होने देने के लिए तैयार नहीं थे। १७५९ के अंत तक अब्दाली अपनी अफगान जनजातियों, अपने बलूच सहयोगियों और अपने रोहिल्ला सहयोगी नजीब खान के साथ लाहौर और साथ ही दिल्ली पहुंच गया था और छोटे दुश्मन सैनिकों को हरा दिया था। इस बिंदु पर, अहमद शाह, रोहिल्ला देश की सीमा पर, अनूपशहर में अपनी सेना वापस ले गए, जहां उन्होंने अवध शुजा-उद-दौला के नवाब को मराठों के खिलाफ अपने गठबंधन में शामिल होने के लिए सफलतापूर्वक मना लिया । मराठों ने पहले फर्रुखाबाद में रोहिल्लाओं को हराने में सफदरजंग (शुजा के पिता) की मदद की थी । [14]

सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व में मराठों ने सेना बनाकर अफगानों के उत्तर भारत लौटने की खबर का जवाब दिया और उन्होंने उत्तर की ओर प्रस्थान किया। होल्कर, सिंधिया, गायकवाड़ और गोविंद पंत बुंदेले के नेतृत्व में कुछ मराठा ताकतों ने भाऊ की

सेना को मजबूत किया । सूरज मल (भरतपुर के जाट शासक) भी शुरू में भाऊसाहेब में शामिल हो गए थे। इस संयुक्त सेना ने दिसंबर १७५९ में एक अफगान गैरीसन से मुगल राजधानी दिल्ली पर कब्जा कर लिया। [17] पिछले आक्रमणों के कारण दिल्ली कई बार राख हो गई थी, और इसके अलावा मराठा शिविर में आपूर्ति की भारी कमी थी। भाऊ ने पहले से ही वंचित शहर को बर्खास्त करने का आदेश दिया। [18] कहा जाता है कि उसने अपने भतीजे और पेशवा के बेटे विश्वासराव को दिल्ली की गद्दी पर बिठाने की योजना बनाई थी। जाटों ने मराठों से अपना समर्थन वापस ले लिया। आगामी लड़ाई से उनकी वापसी को इसके परिणाम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। बुराड़ी घाट पर दत्ताजी शिंदे के नेतृत्व में एक छोटी मराठा सेना पर हमला करके अब्दाली ने पहला खून बहाया। दत्ताजी युद्ध में मारे गए। [14]

युद्ध के लिए तैयार दोनों पक्षों के साथ, करनाल और कुंजपुरा में लड़ी गई दो सेनाओं के बीच झड़पों के साथ, बहुत अधिक युद्धाभ्यास हुआ । दिल्ली के उत्तर में ६० मील दूर यमुना नदी के तट पर स्थित कुंजपुरा पर मराठों ने धावा बोल दिया और पूरे अफगान सैनिक को मार दिया गया या गुलाम बना लिया गया। [१७] मराठों ने कुंजपुरा में वहां तैनात १५,००० अफगानों की सेना के खिलाफ एक आसान जीत हासिल की । अब्दाली के कुछ बेहतरीन सेनापति जैसे नजबत खान मारे गए। [३] [१८] अहमद शाह ने यमुना नदी के बाएं किनारे पर डेरा डाला था, जो बारिश से सूज गई थी, और गैरीसन की सहायता करने के लिए शक्तिहीन थी। दुर्रानी शिविर की दृष्टि में कुंजपुरा चौकी के नरसंहार ने अब्दाली को इस हद तक परेशान कर दिया कि उसने हर कीमत पर नदी पार करने का आदेश दिया। [19] 17 अक्टूबर 1760 को अहमद शाह और उसके सहयोगी दक्षिण की ओर बढ़ते हुए शाहदरा से अलग हो गए । एक सुविचारित जोखिम लेते हुए, अब्दाली नदी में गिर गया, उसके बाद उसके अंगरक्षकों और सैनिकों ने। २३ और २५ अक्टूबर के बीच वे बागपत (नदी से लगभग २४ मील की दूरी पर एक छोटा सा शहर) पार करने में सक्षम थे, मराठों द्वारा निर्विरोध, जो अभी भी कुंजपुरा को बर्खास्त करने में व्यस्त थे। [20]

मराठों द्वारा अब्दाली की सेना को यमुना नदी पार करने से रोकने में विफल रहने के बाद, उन्होंने पानीपत के पास जमीन में रक्षात्मक कार्य स्थापित किए, जिससे अफगानिस्तान तक उनकी पहुंच अवरुद्ध हो गई, जैसे अब्दाली की सेना ने दक्षिण में उनकी सेना को अवरुद्ध कर दिया। हालांकि, 26 अक्टूबर की दोपहर को, अहमद शाह का अग्रिम गार्ड सोनीपत और पानीपत के बीच लगभग आधे रास्ते में संबलका पहुंचा, जहां उनका सामना मराठों के मोहरा से हुआ। एक भयंकर झड़प हुई, जिसमें अफ़गानों ने १००० पुरुषों को खो दिया लेकिन मराठों को उनके मुख्य शरीर में वापस भेज दिया, जो कई दिनों तक धीरे-धीरे पीछे हटता रहा। इससे मराठा सेना का आंशिक घेराव हो गया। इसके बाद हुई झड़पों में, गोविंद पंत बुंदेले, १०,००० हल्के घुड़सवारों के साथ, जो औपचारिक रूप से प्रशिक्षित सैनिक नहीं थे, लगभग ५०० पुरुषों के साथ एक फोर्जिंग मिशन पर थे। वे मेरठ के पास एक अफगान सेना द्वारा आश्चर्यचकित थे, और आगामी लड़ाई में बुंदेले मारा गया। इसके बाद 2,000 मराठा सैनिकों का एक दल खो गया, जो पानीपत को पैसे और राशन देने के लिए दिल्ली छोड़ गए थे । इसने घेराबंदी पूरी कर ली, क्योंकि अहमद शाह ने मराठा सेना की आपूर्ति लाइनों को काट दिया था। [21]

आपूर्ति और भंडार घटने से मराठा शिविर में तनाव बढ़ने लगा। प्रारंभ में मराठा आधुनिक लंबी दूरी की, फ्रांसीसी निर्मित तोपखाने के लगभग 150 टुकड़ों में चले गए थे। कई किलोमीटर की दूरी के साथ, ये बंदूकें उस समय के सर्वश्रेष्ठ में से कुछ थीं। मराठों की योजना अफगान सेना को उनका सामना करने के लिए लुभाने की थी, जबकि उनके पास तोपखाने का करीबी समर्थन था।घेराबंदी के अगले दो महीनों के दौरान, दोनों पक्षों की इकाइयों के बीच लगातार झड़पें और द्वंद्व हुए। इनमें से एक में नजीब ने अपने 3,000 रोहिल्ला खो दिए और लगभग खुद को मार डाला। एक संभावित गतिरोध का सामना करते हुए, अब्दाली ने शर्तों की तलाश करने का फैसला किया, जिस पर भाऊ विचार करने को तैयार थे। हालांकि, नजीब खान ने धार्मिक आधार पर अपील के साथ समझौते के किसी भी अवसर में देरी की और इस बारे में संदेह पैदा किया कि क्या मराठा किसी समझौते का सम्मान करेंगे। [23]

मराठों के कुंजपुरा से पानीपत चले जाने के बाद, दिलेर खान मारवात ने अपने पिता आलम खान मारवात और 2500 पश्तूनों की सेना के साथ कुंजपुरा पर हमला किया और कब्जा कर लिया, जहां 700-800 सैनिकों की एक मराठा सेना थी। उस समय अब्दाली के वजीर शाह वली खान के पुत्र अताई खान बलूच अफगानिस्तान से 10,000 घुड़सवारों के साथ आए और मराठों को आपूर्ति बंद कर दी। [१४] पानीपत में मराठा दक्षिण में अब्दाली, पूर्व में पश्तून जनजातियों (यूसुफ ज़ै, अफरीदी, खट्टक), उत्तर में शुजा, अताई खान और अन्य और अन्य पश्तून जनजातियों (गंडापुर, मारवाट, दुर्रानी और काकर) से घिरे थे।) पश्चिम में। [21] आपूर्ति के बिना जारी रखने या सुदृढीकरण की प्रतीक्षा करने में असमर्थ, भाऊ ने घेराबंदी को तोड़ने का फैसला किया। उनकी योजना तोप की आग से दुश्मन की संरचनाओं को नष्ट करने की थी और जब तक अफगान पूरी तरह से नरम नहीं हो जाते, तब तक अपनी घुड़सवार सेना को नियोजित नहीं करना था। अफ़गानों के टूटने के साथ, वह दिल्ली की ओर रक्षात्मक रूप से शिविर को स्थानांतरित करेगा, जहाँ उन्हें आपूर्ति का आश्वासन दिया गया था।

मराठा सरदारों ने सदाशिवराव भाऊ पर भूख से मरने के बजाय युद्ध में जाने के लिए दबाव डालने के साथ, 13 जनवरी को, मराठों ने भोर से पहले अपना शिविर छोड़ दिया और घेराबंदी को तोड़ने के एक हताश प्रयास में दक्षिण की ओर अफगान शिविर की ओर चल पड़े। सुबह ८:०० बजे के आसपास दोनों सेनाएं आमने-सामने हो गईं [22]

मराठा रेखाएं काला अम्ब के उत्तर में थोड़ी सी शुरू हुईं । इस प्रकार उन्होंने अब्दाली के सैनिकों के उत्तर की ओर जाने वाले मार्ग को अवरुद्ध कर दिया था और उसी समय दक्षिण की ओर जाने से रोक दिया गया था - दिल्ली की दिशा में, जहाँ उन्हें उन्हीं सैनिकों द्वारा बुरी तरह से आवश्यक आपूर्ति मिल सकती थी। पेशवा के बेटे और शाही रक्षक (हुजुरत) के साथ भाऊ केंद्र में

थे। वामपंथी शामिल Gardis तहत इब्राहिम खान । होल्कर और सिंधिया एकदम दाहिनी ओर थे।

मराठा लाइन का गठन लगभग 12 किमी के पार किया गया था, जिसमें तोपखाने सामने थे, जो पैदल सेना, पिकमेन, मस्किटियर और धनुर्धारियों द्वारा संरक्षित थे। घुड़सवार सेना को निर्देश दिया गया था कि वे तोपखाने और संगीन चलाने वाले बंदूकधारियों के पीछे प्रतीक्षा करें, जब युद्ध के मैदान का नियंत्रण पूरी तरह से स्थापित हो गया हो। इस लाइन के पीछे ३०,००० युवा मराठा सैनिकों की एक और अंगूठी थी, जो युद्ध-परीक्षित नहीं थे, और फिर नागरिक थे। कई सामान्य पुरुष, महिलाएं और बच्चे हिंदू पवित्र स्थानों और तीर्थस्थलों की तीर्थ यात्रा पर थे। नागरिकों के पीछे युवा, अनुभवहीन सैनिकों की एक और सुरक्षात्मक पैदल सेना लाइन थी। [14]

दूसरी तरफ अफगानों ने कुछ इसी तरह की रेखा बनाई, जो आज के सनौली रोड के दक्षिण में कुछ मीटर की दूरी पर है। उनके बाएँ को नजीब और उनके दाएँ को दो ब्रिगेड टुकड़ियों द्वारा बनाया जा रहा था। उनके बाएं केंद्र का नेतृत्व दो वज़ीर, शुजा-उद-दौला ने 3,000 सैनिकों और 50-60 तोपों के साथ किया था और अहमद शाह के विज़ीर शाह वली के साथ 19,000 डाक वाले अफगान घुड़सवार थे। [25] सही केंद्र 15,000 शामिल Rohillas तहत हफीज रहमत और रोहिला पठानों के अन्य प्रमुखों। पसंद खान ने 5,000 घुड़सवारों के साथ बाएं पंख को कवर किया, बरकुरदार खान और अमीर बेग ने 3,000 रोहिल्ला घुड़सवारों के साथ दाएं पंख को कवर किया। लड़ाई के दौरान लंबी दूरी के बंदूकधारी भी मौजूद थे। इस क्रम में अहमद शाह की सेना आगे बढ़ी, उसे केंद्र में उसके पसंदीदा पद पर छोड़ दिया, जो अब लाइन के पीछे था, जहाँ से वह लड़ाई देख और निर्देशित कर सकता था।[23]

१४ जनवरी १७६१ को भोर से पहले, मराठा सैनिकों ने शिविर में शक्कर के पानी से अपना उपवास तोड़ दिया और युद्ध के लिए तैयार हो गए। वे खाइयों से निकले, तोपखाने को उनकी पूर्व-व्यवस्थित लाइनों पर स्थिति में धकेल दिया, अफगानों से लगभग 2 किमी। यह देखकर कि लड़ाई चल रही थी, अहमद शाह ने अपनी 60 चिकनी-बोर तोप तैनात की और गोलियां चला दीं। [14]

प्रारंभिक हमले का नेतृत्व इब्राहिम खान के नेतृत्व में मराठा ने किया था, जिन्होंने रोहिल्ला और शाह पसंद खान के खिलाफ अपनी पैदल सेना को आगे बढ़ाया। मराठा तोपखाने से पहला बचाव अफगानों के सिर पर चला गया और बहुत कम नुकसान हुआ। फिर भी, नजीब खान के रोहिल्लाओं के पहले अफगान हमले को मराठा तीरंदाजों और पिकमेन ने तोपखाने की स्थिति के करीब तैनात प्रसिद्ध गार्डी मस्किटर्स की एक इकाई के साथ तोड़ा। दूसरे और बाद के सैल्वो को बिंदु-रिक्त सीमा पर अफगान रैंकों में निकाल दिया गया था। परिणामी नरसंहार ने रोहिल्लाओं को अपनी पंक्तियों में वापस भेज दिया, अगले तीन घंटों के लिए युद्ध के मैदान को इब्राहिम के हाथों में छोड़ दिया, जिसके दौरान 8,000 गार्डी बंदूकधारियों ने लगभग 12,000 रोहिलों को मार डाला। [14]

दूसरे चरण में, भाऊ ने स्वयं अफगान वज़ीर शाह वली खान के अधीन, वामपंथी अफगान बलों के खिलाफ आरोप का नेतृत्व किया। हमले के तीव्र बल ने लगभग अफगान रेखा को तोड़ दिया, और अफगान सैनिकों ने भ्रम की स्थिति में अपने पदों को छोड़ना शुरू कर दिया। अपनी सेना को एकजुट करने की कोशिश करते हुए, शाह वली ने शुजा उद दौला से सहायता की अपील की। हालांकि, नवाब अपनी स्थिति से नहीं टूटे, प्रभावी रूप से अफगान सेना के केंद्र को विभाजित कर दिया। भाऊ की सफलता और आरोप की उग्रता के बावजूद, हमले को पूर्ण सफलता नहीं मिली क्योंकि आधे भूखे मराठा पर्वत समाप्त हो गए थे। इसके अलावा, इन उद्घाटनों को बनाए रखने के लिए मराठों के लिए कोई भारी बख्तरबंद घुड़सवार इकाइयाँ नहीं थीं। अफ़ग़ान सैनिकों को पीछे छोड़ने के लिए, अब्दाली ने अपने नसीबची बंदूकधारियों को उन रेगिस्तानों को मारने के लिए तैनात किया जो अंततः रुक गए और मैदान में लौट आए। [14]

अंतिम चरण

सिंधिया के नेतृत्व में मराठों ने नजीब पर हमला किया। हालाँकि, सिंधिया की सेना को दूर रखते हुए, नजीब ने एक रक्षात्मक कार्रवाई सफलतापूर्वक की। दोपहर तक ऐसा लग रहा था कि भाऊ एक बार फिर मराठों को जीत दिला देंगे। अफ़ग़ान बायाँ किनारा अभी भी अपने पास था, लेकिन केंद्र दो में कट गया था और दाहिना भाग लगभग नष्ट हो गया था। अहमद शाह ने अपने तंबू से युद्ध के भाग्य को देखा था, उसकी बाईं ओर अभी भी अटूट ताकतों द्वारा संरक्षित किया गया था। उसने अपने अंगरक्षकों को अपने शिविर से अपने 15,000 आरक्षित सैनिकों को बुलाने के लिए भेजा और उन्हें ऊंटों की पीठ पर बंदूकधारियों (किज़िलबाश) और 2,000 कुंडा-घुड़सवार शटरनाल या उष्ट्रानाल-तोपों के सामने एक स्तंभ के रूप में व्यवस्थित किया । [24,25]

ऊंटों पर अपनी स्थिति के कारण शटरनाल, मराठा घुड़सवार सेना में अपनी पैदल सेना के सिर पर एक व्यापक सैल्वो फायर कर सकते थे। मराठा घुड़सवार अफगानों की कस्तूरी और ऊंट पर चढ़े कुंडा तोपों का सामना करने में असमर्थ थे। सवार को उतरे बिना उन्हें निकाल दिया जा सकता था और विशेष रूप से तेज-तर्रार घुड़सवार सेना के खिलाफ प्रभावी थे। इसलिए अब्दाली ने अपने स्वयं के 500 अंगरक्षकों को इस आदेश के साथ भेजा कि सभी सक्षम पुरुषों को शिविर से बाहर निकालकर सामने भेज दिया जाए। उसने युद्ध से भागने का प्रयास करने वाले अग्रिम पंक्ति के सैनिकों को दंडित करने के लिए 1,500 और भेजे और बिना किसी दया के किसी भी सैनिक को मार डाला जो लड़ाई में वापस नहीं आएगा। ये अतिरिक्त सैनिक, उसके ४,००० आरक्षित सैनिकों के साथ, दायीं ओर रोहिलों के टूटे हुए रैंकों का समर्थन करने के लिए गए। रिजर्व के शेष, १०,००० मजबूत, शाह वली की सहायता के लिए भेजे गए थे, जो अभी भी मैदान के केंद्र में भाऊ के खिलाफ असमान रूप से श्रम कर रहे थे। इन डाक योद्धाओं को विज़ियर के साथ निकट क्रम में और पूर्ण सरपट पर चार्ज करना था। जब भी वे शत्रु पर आक्रमण करते थे, तो सेनाध्यक्ष और नजीब को दोनों तरफ से गिरने का निर्देश दिया जाता था। [14]

फायरिंग लाइन में अपने स्वयं के लोगों के साथ, मराठा तोपखाने शथर्नल और घुड़सवार सेना के आरोप का जवाब नहीं दे सके। लगभग 14:00 बजे आमने-सामने की लड़ाई शुरू होने से पहले लगभग 7,000 मराठा घुड़सवार और पैदल सेना मारे गए थे। १६:०० बजे तक, थके हुए मराठा पैदल सेना ने बख्तरबंद चमड़े

की जैकेटों द्वारा संरक्षित, ताजा अफगान भंडार के हमलों के आगे झुकना शुरू कर दिया। [14]

सदाशिव राव भाऊ, जिनके पास कोई भंडार नहीं था, अपनी आगे की पंक्तियों को कम होते देख रहे थे, नागरिकों को पीछे और लड़ाई के बीच में विश्वासराव को गायब होते देखकर, उन्हें लगा कि उनके पास अपने हाथी से नीचे आने और लड़ाई का नेतृत्व करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। [1]

इसका फायदा उठाकर, कुंजपुरा की घेराबंदी के दौरान मराठों द्वारा पहले पकड़े गए अफगान सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। कैदियों ने अपनी हरी पट्टियां खोल दीं और दुर्रानी साम्राज्य के सैनिकों का रूप धारण करने के लिए उन्हें पगड़ी के रूप में पहना और भीतर से हमला करना शुरू कर दिया। इससे मराठा सैनिकों में भ्रम और बड़ी घबराहट हुई, जिन्होंने सोचा कि दुश्मन ने पीछे से हमला किया है। मोहरा में कुछ मराठा सैनिक, यह देखकर कि उनका सेनापति उसके हाथी से गायब हो गया था और पीछे की ओर आने वाली अराजकता, घबरा गई और पीछे की ओर बिखर गई। [14]

अब्दाली ने अपनी सेना के एक हिस्से को गार्डियों को घेरने और मारने का काम दिया था, जो मराठा सेना के सबसे बाएं हिस्से में थे। भाऊसाहेब ने विट्ठल विंचुरकर (1500 घुड़सवारों के साथ) और दामाजी गायकवाड़ (2500 घुड़सवारों के साथ) को गार्डियों की रक्षा करने का आदेश दिया था। हालांकि, गार्डियों को दुश्मन सैनिकों पर अपनी तोप की आग को निर्देशित करने के लिए कोई मंजूरी नहीं मिलने के बाद, उन्होंने अपना धैर्य खो दिया और खुद रोहिलों से लड़ने का फैसला किया। इस प्रकार, उन्होंने अपनी स्थिति तोड़ दी और रोहिल्लाओं पर आक्रमण कर दिया। रोहिल्ला राइफलमैन ने मराठा घुड़सवार सेना पर सटीक फायरिंग शुरू कर दी, जो केवल तलवारों से लैस थी। इसने रोहिल्लाओं को गार्डियों को घेरने और मराठा केंद्र से आगे निकलने का मौका दिया, जबकि शाह वली ने मोर्चे पर हमला करने के लिए दबाव डाला। इस प्रकार गार्डिस रक्षाहीन रह गए और एक-एक करके गिरने लगे। [14]

विश्वासराव की पहले ही सिर में गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। भाऊ और हुजुरती शाही सेना अंत तक लड़े, तीन घोड़ों वाले मराठा नेता को उनके नीचे से गोली मार दी गई। इस स्तर पर, होल्कर और सिंधिया की टुकड़ी, यह महसूस करते हुए कि लड़ाई हार गई थी, अपनी सेना को मराठा दाहिनी ओर से एक टुकड़ी के साथ मिला दिया और दुर्रानी लाइनों में दक्षिण की ओर खुलने से बच गए क्योंकि जानकोजी राव सिंधिया ने पतलेपन को मजबूत करने के लिए दूसरे दल का नेतृत्व किया। मराठों की पंक्तियाँ [27,28] मराठा फ्रंट लाइन काफी हद तक बरकरार रही, उनकी कुछ तोपखाने इकाइयां सूर्यास्त तक लड़ती रहीं। रात के हमले को शुरू न करने का विकल्प चुनकर, उस रात कई मराठा सैनिक भाग निकले। भाऊ की पत्नी पार्वतीबाई, जो मराठा शिविर के प्रशासन में सहायता कर रही थी, मल्हार राव होल्कर की टुकड़ी के संरक्षण में नाना फडणवीस के साथ अपने अंगरक्षक, जानू भिन्ताडा के साथ पुणे भाग गई । लगभग 15,000 सैनिक ग्वालियर पहुँचने में सफल रहे । [26]

निष्कर्ष

दुर्रानी के पास मराठों पर संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों श्रेष्ठता थी। संयुक्त अफगान सेना मराठों की तुलना में बहुत बड़ी थी। हालाँकि मराठों की पैदल सेना को यूरोपीय तर्ज पर संगठित किया गया था और उनकी सेना के पास उस समय की कुछ बेहतरीन फ्रांसीसी निर्मित बंदूकें थीं, उनकी तोपें स्थिर थीं और तेजी से आगे बढ़ने वाली अफगान सेनाओं के खिलाफ उनमें गतिशीलता का अभाव था। अफगानों के भारी घुड़सवार तोपखाने मराठों के हल्के तोपखाने की तुलना में युद्ध के मैदान में काफी बेहतर साबित हुए। [२७] अब्दाली से लड़ने के लिए अन्य हिंदू राजाओं में से कोई भी सेना में शामिल नहीं हुआ। अब्दाली के सहयोगी, अर्थात्, नजीब, शुजा और रोहिल्ला उत्तर भारत को अच्छी तरह से जानते थे। वह हिंदू नेताओं, विशेष रूप से जाटों और राजपूतों, और अवध के नवाब जैसे पूर्व प्रतिद्वंद्वियों के साथ राजनयिक, हड़ताली समझौते भी थे, जो उन्हें धर्म के नाम पर अपील करते थे। [14]

इसके अलावा, वरिष्ठ मराठा प्रमुख लगातार एक-दूसरे के साथ मनमुटाव करते थे। प्रत्येक की अपने स्वतंत्र राज्यों को तराशने की महत्वाकांक्षा थी और एक आम दुश्मन के खिलाफ लड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। [२८] उनमें से कुछ ने एक खड़ी लड़ाई के विचार का समर्थन नहीं किया और दुश्मन पर सीधा आरोप लगाने के बजाय गुरिल्ला रणनीति का उपयोग करके लड़ना चाहते थे। [२९] मराठा अकेले उस स्थान पर लड़ रहे थे जो उनकी राजधानी पुणे से १००० मील दूर था ।

रघुनाथराव को सेना को मजबूत करने के लिए उत्तर की ओर जाना था। रघुनाथराव ने बड़ी मात्रा में धन और सेना मांगी, जिसे उनके चचेरे भाई और पेशवा के दीवान सदाशिवराव भाऊ ने अस्वीकार कर दिया, इसलिए उन्होंने जाने से इनकार कर दिया। [११] सदाशिवराव भाऊ मराठा सेना के प्रमुख बनाए गए थे, जिसके तहत पानीपत की लड़ाई लड़ी गई थी। कुछ इतिहासकारों का मत है कि पेशवा का मल्हारराव होल्कर या रघुनाथराव के बजाय सदाशिवराव भाऊ को सर्वोच्च कमांडर के रूप में नियुक्त करने का निर्णय दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ, क्योंकि सदाशिवराव उत्तर भारत की राजनीतिक और सैन्य स्थिति से पूरी तरह अनभिज्ञ थे। [31]

अगर होल्कर युद्ध के मैदान में रहते तो मराठा की हार देर से होती लेकिन टलती नहीं। यदि मराठों ने पंजाब और उत्तर भारत में मल्हारराव होल्कर की सलाह के अनुसार अपने पारंपरिक गनीमी कावा, या गुरिल्ला युद्ध का संचालन किया होता, तो अहमद शाह की खड़ी लड़ाई में श्रेष्ठता को नकारा जा सकता था । अब्दाली अनिश्चित काल तक भारत में अपनी फील्ड सेना को बनाए रखने की स्थिति में नहीं था।[29,30]

पानीपत की सड़कों पर अफ़ग़ान घुड़सवार सेना और पिकमेन बेतहाशा दौड़ पड़े, जिसमें हज़ारों मराठा सैनिक और नागरिक मारे गए। [८] [९] अफगान अधिकारी जो युद्ध में अपने परिजन खो चुके थे, उन्हें अगले दिन भी पानीपत और आसपास के इलाकों में मराठों का नरसंहार करने की अनुमति दी गई थी । [३२] उन्होंने अपने शिविरों के बाहर कटे हुए सिर के विजय टीले की व्यवस्था की। शुजा-उद-दौला के दीवान काशी राज द्वारा लिखित एक सर्वश्रेष्ठ प्रत्यक्षदर्शी क्रॉनिकल के अनुसार - युद्ध के अगले दिन लगभग 40,000 मराठा कैदियों को ठंडे खून में मार दिया गया था। [८] [९] बॉम्बे गजट के एक रिपोर्टर हैमिल्टन के अनुसार, पानीपत शहर में लगभग ५० लाख मराठी लोग मौजूद थे और

वह अफगानों द्वारा निष्पादित ४०,००० कैदियों का आंकड़ा देता है। [31,32] लगभग २२,००० महिलाओं और बच्चों को गुलाम बनाकर भगा दिया गया। [32]

सभी कैदियों को बांस के पिंजरों में बैलगाड़ियों, ऊंटों और हाथियों पर ले जाया गया । [32]

सियार-उत-मुताखिरिन कहते हैं:

दुखी कैदियों को लंबी लाइनों में घुमाया गया, थोड़ा सूखा अनाज और पानी पिलाया गया, और सिर काट दिया गया ... और जो महिलाएं और बच्चे बच गए, उन्हें दास के रूप में खदेड़ दिया गया - बाईस हजार, उनमें से कई सर्वोच्च रैंक के थे देश में।

विश्वासराव और भाऊ के शवों को मराठों ने बरामद किया और उनकी परंपरा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार किया गया। [३३] भाऊ की पत्नी पार्वतीबाई को होल्कर ने भाऊ के निर्देशानुसार बचा लिया और अंततः पुणे लौट गईं ।

पेशवा बालाजी बाजी राव, अपनी सेना की स्थिति के बारे में बेख़बर, हार के बारे में सुनते ही नर्मदा को सुदृढीकरण के साथ पार कर रहे थे। वह पुणे लौट आया और पानीपत में पराजय के सदमे से कभी नहीं उबर पाया। [35] शूरेश शर्मा के अनुसार, "यह बालाजी बाजीराव का प्यार था जो पानीपत के लिए जिम्मेदार था। उन्होंने 27 दिसंबर तक पैठन में अपनी दूसरी शादी का जश्न मनाने में देरी की, जब बहुत देर हो चुकी थी।" [34]

जानकोजी सिंधिया को बंदी बना लिया गया और नजीब के कहने पर फांसी दे दी गई। इब्राहिम खान गार्डी को क्रोधित अफगान सैनिकों द्वारा प्रताड़ित किया गया और मार डाला गया। [३३] पानीपत में हुए नुकसान से मराठा कभी पूरी तरह से उबर नहीं पाए, लेकिन वे भारतीय उपमहाद्वीप में प्रमुख सैन्य शक्ति और सबसे बड़े साम्राज्य बने रहे और दस साल बाद दिल्ली को फिर से हासिल करने में कामयाब रहे। हालाँकि, पूरे भारत पर उनका दावा तीन एंग्लो-मराठा युद्धों के साथ समाप्त हो गया, पानीपत के लगभग 50 साल बाद, 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में। [35]

सूरज मल के अधीन जाटों को पानीपत की लड़ाई में भाग न लेने से काफी फायदा हुआ। उन्होंने लड़ाई से बचने वाले मराठा सैनिकों और नागरिकों को काफी सहायता प्रदान की। [36]

हालांकि अब्दाली ने लड़ाई जीत ली, लेकिन उसके पक्ष में भी भारी हताहत हुए और मराठों के साथ शांति की मांग की। अब्दाली ने नानासाहेब पेशवा (जो अब्दाली के खिलाफ भाऊ में शामिल होने के लिए बहुत धीमी गति से यद्यपि दिल्ली की ओर बढ़ रहा था) को एक पत्र भेजा जिसमें पेशवा से अपील की गई कि वह वह नहीं था जिसने भाऊ पर हमला किया था और सिर्फ अपना बचाव कर रहा था। अब्दाली ने १० फरवरी १७६१ को पेशवा को लिखे अपने पत्र में लिखा: [37,38]

हमारे बीच वैमनस्य होने का कोई कारण नहीं है। आपका पुत्र विश्वासराव और आपका भाई सदाशिवराव युद्ध में मारे गए, दुर्भाग्यपूर्ण था। भाऊ ने लड़ाई शुरू की, इसलिए मुझे अनिच्छा से वापस लड़ना पड़ा। फिर भी मुझे उनकी मौत का दुख है। कृपया दिल्ली की अपनी संरक्षकता पहले की तरह जारी रखें, इसका मुझे कोई विरोध नहीं है। सतलज तक पंजाब को ही रहने दो। शाह आलम को दिल्ली की गद्दी पर फिर से बहाल करो जैसा तुमने पहले किया था और हमारे बीच शांति और दोस्ती हो, यही मेरी प्रबल इच्छा है। मुझे वह इच्छा प्रदान करें।

इन परिस्थितियों ने अब्दाली को जल्द से जल्द भारत छोड़ दिया। प्रस्थान करने से पहले, उन्होंने शाह आलम द्वितीय को सम्राट के रूप में मान्यता देने के लिए, एक शाही फरमान (आदेश) (क्लाइव ऑफ इंडिया सहित) के माध्यम से भारतीय प्रमुखों को आदेश दिया । [38]

१७६५ में भारत का नक्शा, नवाबों और रियासतों के पतन से पहले, नाममात्र रूप से सम्राट से संबद्ध (मुख्य रूप से हरे रंग में)।

अहमद शाह ने नजीब-उद-दौला को मुग़ल सम्राट का प्रत्यक्ष प्रतिनिधि भी नियुक्त किया। इसके अलावा, नजीब और मुनीर-उद-दौला ने मुगल राजा की ओर से अब्दाली को चार मिलियन रुपये की वार्षिक श्रद्धांजलि देने पर सहमति व्यक्त की। [३८] यह उत्तर भारत के लिए अहमद शाह का अंतिम प्रमुख अभियान था, क्योंकि युद्ध में हुए नुकसान ने उन्हें मराठों के खिलाफ कोई और युद्ध छेड़ने की क्षमता के बिना छोड़ दिया, और जैसे ही वह सिखों के उदय के साथ तेजी से व्यस्त हो गए। [39,40]

शाह शुजा की सेना (फारसी सलाहकारों सहित) ने मराठा सेनाओं के खिलाफ खुफिया जानकारी एकत्र करने में निर्णायक भूमिका निभाई और सैकड़ों हताहतों की संख्या में अग्रणी पर हमला करने में कुख्यात थी। [40]

पानीपत की लड़ाई के बाद रोहिल्ला की सेवाओं को नवाब फैज-उल्लाह खान को शिकोहाबाद और नवाब सदुल्लाह खान को जलेसर और फिरोजाबाद के अनुदान से पुरस्कृत किया गया । नजीब खाँ एक प्रभावशाली शासक सिद्ध हुआ। हालांकि, 1770 में उनकी मृत्यु के बाद, रोहिल्ला ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं से हार गए थे । [41,42] 30 अक्टूबर 1770 को नजीब की मृत्यु हो गई। [41]

युद्ध का परिणाम उत्तर में आगे मराठा अग्रिमों को अस्थायी रूप से रोकना और लगभग दस वर्षों तक उनके क्षेत्रों को अस्थिर करना था। इस अवधि को पेशवा माधवराव के शासन द्वारा चिह्नित किया जाता है, जिन्हें पानीपत में हार के बाद मराठा वर्चस्व के पुनरुद्धार का श्रेय दिया जाता है। 1771 में, पानीपत के दस साल बाद, महादजी शिंदे ने एक दंडात्मक अभियान में उत्तरी भारत में एक बड़ी मराठा सेना का नेतृत्व किया, जिसने उस क्षेत्र में मराठा वर्चस्व को फिर से स्थापित किया और दुर्दम्य शक्तियों को दंडित किया जो या तो अफगानों के साथ थे, जैसे कि रोहिल्ला, या पानीपत के बाद मराठा वर्चस्व को तोड़ा । [१४] लेकिन उनकी सफलता अल्पकालिक थी। 28 साल की उम्र में माधवराव की असामयिक मृत्यु से अपंग, इसके तुरंत बाद मराठा प्रमुखों के बीच अंदरूनी कलह शुरू हो गई, और अंततः 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी प्रशासन द्वारा उन्हें पराजित और कब्जा कर लिया गया। [42]

मराठों द्वारा प्रदर्शित वीरता की प्रशंसा अहमद शाह अब्दाली ने अपने सहयोगी जयपुर के राजा माधो सिंह को लिखे पत्र में की थी । [43] [44]

मराठों ने सबसे बड़ी वीरता के साथ लड़ाई लड़ी जो अन्य जातियों की क्षमता से परे थी ... ये निडर रक्तपात करने वाले लड़ने और शानदार काम करने में कम नहीं थे ... अचानक जीत की हवा बहने लगी ... और दुखी दक्कन को हार का सामना करना पड़ा।

पानीपत की तीसरी लड़ाई में युद्ध के एक ही दिन में भारी संख्या में मौतें और घायल हुए। 1947 में पाकिस्तान और भारत के निर्माण तक दक्षिण एशियाई नेतृत्व वाली सैन्य शक्तियों के बीच यह आखिरी बड़ी लड़ाई थी ।

अपने राज्य को बचाने के लिए मुगलों ने एक बार फिर पाला बदल लिया और दिल्ली में अफगानों का स्वागत किया। मुगलों का भारत के छोटे-छोटे क्षेत्रों पर नाममात्र का नियंत्रण रहा, लेकिन फिर वे कभी भी एक शक्ति नहीं रहे। साम्राज्य आधिकारिक तौर पर 1857 में समाप्त हो गया जब इसके अंतिम सम्राट बहादुर शाह द्वितीय पर भारतीय विद्रोह में शामिल होने और निर्वासित होने का आरोप लगाया गया।

पुणे के पेशवे पार्क में "द ग्रेट पेशवा माधवराव" की स्मृति में एक स्मारक, जिन्होंने पानीपत के नुकसान के बाद मराठा साम्राज्य को बहाल किया।

युद्ध के कारण मराठों के विस्तार में देरी हुई, और प्रारंभिक हार से मराठों के मनोबल को हुए नुकसान ने साम्राज्य के भीतर संघर्ष को जन्म दिया। उन्होंने अगले पेशवा माधवराव प्रथम के तहत अपनी स्थिति को पुनः प्राप्त कर लिया और उत्तर के नियंत्रण में वापस आ गए, अंत में 1771 तक दिल्ली पर कब्जा कर लिया । [45,46]

हालाँकि, माधवराव की मृत्यु के बाद, ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अंदरूनी कलह और बाहरी संघर्षों के कारण, एक साम्राज्य के रूप में उनकी राजनीतिक स्थिति केवल 1818 में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेनाओं के खिलाफ तीन युद्धों के बाद आधिकारिक रूप से समाप्त हो गई ।

इस बीच, सिख-जिनके विद्रोह का मूल कारण अहमद ने आक्रमण किया था- युद्ध से काफी हद तक अछूते रह गए थे। उन्होंने जल्द ही लाहौर को वापस ले लिया। जब अहमद शाह मार्च १७६४ में लौटे तो उन्हें अफगानिस्तान में विद्रोह के कारण केवल दो सप्ताह के बाद अपनी घेराबंदी तोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा । वह 1767 में फिर से लौट आया लेकिन कोई निर्णायक लड़ाई जीतने में असमर्थ रहा। अपने स्वयं के सैनिकों द्वारा भुगतान नहीं किए जाने की शिकायत के साथ, वह अंततः इस क्षेत्र को सिख खालसा राज से हार गया, जो 1849 तक नियंत्रण में रहा, जब इसे ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा कब्जा कर लिया गया था।

रुडयार्ड किपलिंग की कविता "विथ सिंधिया टू डेल्ही" में युद्ध का उल्लेख किया गया था ।

निराशा के संकेत के लिए हमारे हाथ और दुपट्टे भगवा रंग में रंगे हुए थे,

जब हम साथ लड़ाई करने के लिए Paniput को आगे चला गया

एरे हम पानीपुट से वापस आए और वहां एक राज्य छोड़ दिया।[48,49]

हालाँकि, इसे दोनों पक्षों की वीरता के दृश्य के रूप में भी याद किया जाता है। कहा जाता है कि वज़ीर शाह वली खान के दत्तक पुत्र अताई खान को इसी दौरान मार दिया गया था, जब यशवंतराव पवार अपने हाथी के ऊपर चढ़ गए और उसे नीचे गिरा दिया। [४५] [४६] संताजी वाघ की लाश ४० से अधिक नश्वर घावों के साथ मिली थी। [47]

संदर्भ

[1] कौशिक रॉय, भारत की ऐतिहासिक लड़ाई: सिकंदर महान से कारगिल तक, (ओरिएंट लॉन्गमैन, 2004), 90।

[2] ई शर्मा, सुरेश के। (2006)। हरियाणा: अतीत और वर्तमान । आईएसबीएन ९७८८१८३२४०४६८.

[3] वर्मा, आभास (2013)। पानीपत की तीसरी लड़ाई । आईएसबीएन ९७८८१८०९०३३२८.

[4] कुल्के, हरमन; रोदरमुंड, डाइटमार (2004)। भारत का एक इतिहास । आईएसबीएन ९७८०४१५३२९१९४.

[5] इतिहास । आईएसबीएन ९७८८१८७१३९६९०.

[6] रॉय, कौशिक (2004). भारत के ऐतिहासिक युद्ध: सिकंदर महान से कारगिल तक । पीपी। 84-85-93। आईएसबीएन ९७८८१७८२४१०९८.

[7] "पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761) | पानीपत, हरियाणा"।

[8] जेम्स ग्रांट डफ "हिस्ट्री ऑफ़ द महराट्स, वॉल्यूम ॥ (अध्याय 5), प्रिंटेड फॉर लॉन्गमैन, रीस, ओर्मे, ब्राउन और ग्रीन, १८२६"

[9] शेजवलकर, "पानीपत 1761" (मराठी और अंग्रेजी में) डेक्कन कॉलेज मोनोग्राफ श्रृंखला। आई., पुणे (1946)

[10] ब्लैक, जेरेमी (2002)। अठारहवीं शताब्दी में युद्ध । कैसेल। आईएसबीएन 978-0304362127.

[11] रघुनाथराव

[12] कीने, एचजी द फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर ऑफ हिंदुस्तान । छठी । पीपी. 80-81.

[13] अग्रवाल, अश्विनी (1983)। "पानीपत की लड़ाई के लिए अग्रणी घटनाएँ"। मुगल इतिहास में अध्ययन । मोतीलाल बनारसीदास। पी 26. आईएसबीएन 978-8120823266.

[14] शेजवलकर, त्र्यंबक। पानीपत 1761 । आईएसबीएन ९७८८१७४३४६४२१.

[15] रॉबिन्सन, हावर्ड; जेम्स थॉमसन शॉटवेल (1922)। मुगल साम्राज्य। ब्रिटिश साम्राज्य का विकास । ह्यूटन मिफ्लिन। पी ९१.

[16] अग्रवाल, अश्विनी (1983)। "पानीपत की लड़ाई के लिए अग्रणी घटनाएँ"। मुगल इतिहास में अध्ययन। मोतीलाल बनारसीदास। पी 26. आईएसबीएन ८१२८२३२६५ ।

[17] सैयद अल्ताफ अली बरेलवी, हाफिज रहमत खान का जीवन भी देखें । पीपी। 108-09।

[18] इंपीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया: प्रांतीय सीरीज । अधीक्षक सरकार के प्रिंट करें। १९०८. पीपी. ३१४-. 29 जून 2013 को लिया गया ।

[19] लतीफ, एस एम। "पंजाब का इतिहास" । पी २३५.

[20] शेजवलकर, त्र्यंबक। पानीपत 1761 । आईएसबीएन ९७८८१७४३४६४२१.

[21] रॉलिन्सन, एचजी (1926)। पानीपत के अंतिम युद्ध का लेखाजोखा । ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।

[22] रॉलिन्सन, एचजी (1926)। पानीपत के अंतिम युद्ध का लेखाजोखा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।

[23] कीने, एचजी (1887)। भाग I, अध्याय VI: हिंदुस्तान के मुगल साम्राज्य का पतन ।

[24] रॉलिन्सन, एचजी (1926)। पानीपत के अंतिम युद्ध का लेखाजोखा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।

[25] रॉलिन्सन, एचजी (1926)। पानीपत के अंतिम युद्ध का लेखाजोखा। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस ।

[26] कॉन्स्टेंटिन नोसोव द्वारा लिखित युद्ध हाथी, पीटर डेनिस द्वारा चित्रित प्रारूप: ट्रेड पेपरबैक आईएसबीएन 978-1-84603-268-4

[27] चंद्रा, सतीश (2004). "बाद में मुगल"। मध्यकालीन भारत: सल्तनत से मुगलों तक भाग II । हर-आनंद। आईएसबीएन 978-81-241-1066-9.

[28] जेम्स रैपसन, एडवर्ड; वोल्सेली हैग; रिचर्ड बर्न; हेनरी डोडवेल; रॉबर्ट एरिक मोर्टिमर व्हीलर (1937)। द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया: द मुगुल पीरियड, डब्ल्यू. हैग द्वारा नियोजित । ४. कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी 448.

[29] रॉय, कौशिक (2004). भारत के ऐतिहासिक युद्ध: सिकंदर महान से कारगिल तक । ओरिएंट ब्लैकस्वान। पी 91. आईएसबीएन 978-8-17824-109-8.

[30] "250 साल बाद, पानीपत की लड़ाई पर दोबारा गौर किया" । रेडिफ डॉट कॉम । 13 जनवरी 2011 । 26 मार्च 2012 को लिया गया ।

[31] क्लाउड मार्कोविट्स, ए हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न इंडिया, १४८०-१९५०। पी 207.

[32] रॉलिन्सन, एचजी (1937)। कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया। चतुर्थ । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। पी 424+ नोट।

[33] बरुआ, प्रदीप (1994). "भारत में सैन्य विकास, १७५०-१८५०"। सैन्य इतिहास का जर्नल । 58 (4): 599–616। डोई : 10.2307/2944270 । जेएसटीओआर 2944270।

[34] शर्मा, सुरेश के. (2006)। हरियाणा: अतीत और वर्तमान। मित्तल प्रकाशन। पी 173. आईएसबीएन ९७८८१८३२४०४६८. 7 मार्च 2019 को लिया गया ।

[35] सरकार, जदुनाथ (1950)। मुगल साम्राज्य का पतन । लोंगमैन। पी २३५.

[36] केआर कानूनगो, जाटों का इतिहास, एड डॉ वीर सिंह, दिल्ली, 2003, पी। 83

[37] जीएस सरदेसाई की मराठी रियासत, खंड २। "इस पत्र का संदर्भ सरदेसाई द्वारा रियासत में दिया गया है - पेशवे दफ्तर पत्र २.१०३, १४६; २१.२०६; १.२०२, २०७, २१०, २१३; २९, ४२, ५४, और ३९.१६१। दस्तावेज़ संख्या 2.301, शेजवलकर का पानीपत, पृष्ठ संख्या 99. मोरोपंता का खाता - 1.1, 6, 7" ।

[38] मोहसिनी, हारून। "अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण" । अफगान-network.net. से संग्रहीत मूल 13 अगस्त 2007 को । 13 अगस्त 2007 को लिया गया ।

[39] मैकिलोड, जॉन (2002)। भारत का इतिहास । ग्रीनवुड प्रेस।

[40] शाह आलम का शासन, १७५९ -१८०६ भारत का शाही राजपत्र, १९०९, वी. २, पृ. 411.

[41] शाह आलम का शासन, १७५९ -१८०६ भारत का शाही राजपत्र, १९०९, वी. २, पृ. 411.

[42] https://www.thehindu.com/features/kids/पेशवा-पराजय /लेख १४३८०३१४.ece

[43] "पानीपत की तीसरी लड़ाई के हारे हुए मराठा" । इंडिया टुडे । 12 जनवरी 2012 । 5 अप्रैल 2017 को लिया गया ।

[44] सरदेसाई, गोविंद सखाराम (1946)। मराठों का नया इतिहास खंड २ । पीपी 444 ।

[45] "इंडिया_मॉडर्न_पेशवास04" ।

[46] "पानीपत की तीर्थयात्रा" ।यह सिखों की ओर से भी एक बदला था क्योंकि यह वही था जो अतैखान बाबा दीप सिंहजी का हत्यारा था और 1757 में हरमंदिर साहिब का अपमान करने वाला था।

[47] राव, एस। "पानीपत की सड़कों पर चलना" । इंडियन ऑयल न्यूज। मूल से २८ अप्रैल २००८ को संग्रहीत । ८ अप्रैल २००८ को पुनःप्राप्त.

[48] पानीपत । वर्ल्ड कैट । नवभारत साहित्य मंदिर। ओसीएलसी 57710656 ।

[49] "पानीपत - आधिकारिक ट्रेलर" । रिलायंस एंटरटेनमेंट । 5 नवंबर 2019।